NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत को अपने घाटे के लक्ष्य को लोचशील बनाए रखने की आवश्यकता है

www.nextias.com

भारत को अपने घाटे के लक्ष्य को लोचशील बनाए रखने की आवश्यकता है

संदर्भ

- चूँकि भारत का लक्ष्य 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनना है, इसलिए राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों के प्रति अधिक लोचशील दृष्टिकोण अपनाना महत्त्वपूर्ण है, ताकि राजकोषीय विवेक से समझौता किए बिना दीर्घकालिक निवेश सुनिश्चित किया जा सके।

राजकोषीय घाटा लक्ष्य को समझना

- राजकोषीय घाटा तब होता है जब सरकार का कुल व्यय, उधार को छोड़कर, उसके कुल राजस्व से अधिक हो जाता है।
- भारत में, राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम, 2003 ने राजकोषीय अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए शुरू में राजकोषीय घाटे के लिए एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित किया था।
- हालाँकि, विकसित हो रही व्यापक आर्थिक स्थितियों और आर्थिक झटकों ने नीति निर्माताओं को अधिक लचीले दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है - जिसे लोचशील घाटा लक्ष्य कहा जाता है।
- यह आर्थिक चक्रों, बाहरी आघातों और निवेश प्राथमिकताओं के आधार पर राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों को समायोजित करने की अनुमति देता है।

लोचशीलता के प्रमुख घटक

- **प्रति-चक्रीयता:** आर्थिक मंदी के दौरान उच्च घाटे की अनुमति देना और उच्च-विकास अवधि के दौरान समेकन करना।
- **व्यय प्राथमिकता:** गैर-जरूरी व्यय में कटौती करते हुए बुनियादी ढाँचे और कल्याण जैसे आवश्यक व्यय पर ध्यान केंद्रित करना।
- **राजस्व संबंधी विचार:** कर संग्रह दक्षता, विनिवेश आय और अन्य राजकोषीय प्रवाह के आधार पर लक्ष्यों को अनुकूलित करना।
- **बचाव खंड:** संकटों (जैसे, महामारी, वैश्विक आघातों) के दौरान घाटे के लक्ष्यों से विचलित होने के लिए अंतर्निहित तंत्र।

निश्चित बनाम लोचशील घाटे के लक्ष्य

मापदंड	निश्चित घाटा लक्ष्य	लोचशील घाटा लक्ष्य
परिभाषा	राजकोषीय घाटे पर कठोर संख्यात्मक सीमा (जैसे, सकल घरेलू उत्पाद का 3%)	आर्थिक स्थितियों के आधार पर विचलन की अनुमति देता है
अनुकूलन क्षमता	कठोर, आघातों के प्रति कम संवेदनशील	गतिशील, बदलती आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप समायोजित
विकास पर विचार	राजकोषीय समेकन को प्राथमिकता	राजकोषीय विवेकशीलता को विकास आवश्यकताओं के साथ संतुलित करना
उदाहरण	FRBM अधिनियम का प्रारंभिक 3% लक्ष्य	FRBM अधिनियम का संशोधित बचाव खंड विचलन की अनुमति देता है

भारत में लोचशील घाटा लक्ष्यीकरण का विकास

FRBM अधिनियम और संशोधन:

- **FRBM अधिनियम, 2003:** राजकोषीय घाटे को GDP के 3% तक कम करने का आदेश दिया गया।

- **FRBM समीक्षा समिति (2017, एन.के. सिंह पैनल):** 2.5% - 3% लक्ष्य और अपवादस्वरूप परिस्थितियों में 0.5% के विचलन की अनुमति देने वाले एस्केप क्लॉज के साथ अधिक लचीले दृष्टिकोण की सिफारिश की गई।
- **कोविड-19 प्रभाव (2020-21):** सरकार ने राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को बढ़ाकर GDP का 9.5% कर दिया, जिससे राजकोषीय प्रबंधन में लचीलेपन की आवश्यकता प्रदर्शित हुई।
- **केंद्रीय बजट 2021-22 और उसके पश्चात्:** सरकार ने महामारी से पहले के स्तर पर तत्काल वापसी लागू करने के बजाय, वित्त वर्ष 2025-26 तक घाटे को GDP के 4.5% तक कम करने का मध्यम अवधि का लक्ष्य निर्धारित किया।
  - आर्थिक सुधार को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचे और सामाजिक कल्याण पर अधिक व्यय की अनुमति दी गई।
  - सरकार ने लक्ष्यों के कठोरता से पालन की तुलना में व्यावहारिक राजकोषीय प्रबंधन पर बल दिया।
    - आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए पूँजीगत व्यय को बढ़ावा दिया गया।
    - आक्रामक राजकोषीय नियंत्रण के बजाय धीरे-धीरे घाटे में कमी।
    - आर्थिक आवश्यकताओं के आधार पर लक्ष्यों को फिर से निर्धारित करने की इच्छा।
    - यह लोचशील घाटे के लक्ष्यीकरण की ओर वास्तविक बदलाव का संकेत देता है।

भारत को लोचशील घाटा लक्ष्य की आवश्यकता क्यों है?

- **आर्थिक आघात और वैश्विक अनिश्चितता:** कोविड-19, भू-राजनीतिक तनाव और तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव जैसी घटनाओं के कारण प्रति-चक्रीय उपायों के लिए राजकोषीय स्थान की आवश्यकता होती है।
  - एक कठोर घाटा लक्ष्य संकट के दौरान सरकारी हस्तक्षेप को सीमित कर सकता है।
- **निवेश-संचालित विकास रणनीति:** सरकार के पूँजीगत व्यय (कैपेक्स) को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचे पर निरंतर व्यय की आवश्यकता होती है, जो निश्चित घाटे की सीमा से अधिक हो सकता है।
  - लचीले लक्ष्य सरकार को मनमाने ढंग से व्यय में कटौती करने के बजाय रणनीतिक रूप से उधार लेने की अनुमति देते हैं।
- **प्रति-चक्रीय राजकोषीय नीति:** आर्थिक मंदी के दौरान, सरकार को माँग को बढ़ावा देने के लिए खर्च बढ़ाना चाहिए।
  - उच्च विकास की अवधि में, राजकोषीय अनुशासन बनाए रखने के लिए घाटे के लक्ष्यों को कड़ा किया जा सकता है।
- **बुनियादी ढाँचे और सामाजिक क्षेत्र की जरूरतें:** भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को बुनियादी ढाँचे, स्वास्थ्य और शिक्षा में निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है।
  - एक कठोर घाटा लक्ष्य इन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यय में कटौती करने के लिए मजबूर कर सकता है।
- **निजी क्षेत्र का विश्वास:** एक संतुलित दृष्टिकोण - जहाँ अत्यधिक कठोरता के बिना राजकोषीय अनुशासन बनाए रखा जाता है - निवेशकों का विश्वास बढ़ा सकता है।
  - महत्त्वपूर्ण बात यह सुनिश्चित करना है कि राजकोषीय विस्तार लक्षित और उत्पादक हो।

लोचशील घाटा लक्ष्यीकरण की चुनौतियाँ

- **राजकोषीय अनुशासनहीनता का जोखिम:** सख्त लक्ष्यों की कमी से अनियंत्रित उधारी, ऋण-से-जीडीपी अनुपात में वृद्धि और क्रेडिट रेटिंग डाउनग्रेड का जोखिम हो सकता है।
  - बाजार और क्रेडिट रेटिंग एजेंसियाँ नीति पूर्वानुमान के लिए स्पष्ट घाटे के लक्ष्यों को प्राथमिकता देती हैं।

- **बाजार की धारणा और निवेशक का विश्वास:** अंतर्राष्ट्रीय निवेशक राजकोषीय पूर्वानुमान को प्राथमिकता देते हैं। घाटे के लक्ष्यों में बार-बार समायोजन से नीति अनिश्चितता उत्पन्न हो सकती है, जिससे बॉन्ड बाजार और FDI प्रवाह प्रभावित हो सकते हैं।
- **मुद्रास्फीति का दबाव:** बढ़ी हुई सरकारी उधारी मुद्रास्फीति को बढ़ावा दे सकती है, खासकर जब आपूर्ति पक्ष की बाधाएँ मौजूद हों।
- **उच्च ब्याज लागत:** लगातार उच्च घाटे से सरकारी ऋण और ब्याज भुगतान में वृद्धि होती है, जिससे विकास परियोजनाओं के लिए धन सीमित हो जाता है।
- **कल्याण कार्यक्रम की बाधाएँ:** केरल एवं तमिलनाडु जैसे व्यापक कल्याण मॉडल वाले राज्य स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसी सेवाओं का विस्तार करने के लिए संघर्ष करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाएँ

- **संयुक्त राज्य अमेरिका:** प्रतिचक्रीय राजकोषीय नीतियों को अपनाता है, मंदी के दौरान उच्च घाटे की अनुमति देता है और विकास के चरणों के दौरान क्रमिक समेकन का लक्ष्य रखता है।
- **जर्मनी:** पारंपरिक रूप से सख्त राजकोषीय अनुशासन का पालन करता है, लेकिन कोविड-19 के दौरान अपने 'ऋण ब्रेक' को ढीला कर दिया।
- **जापान:** 200% ऋण-से-जीडीपी अनुपात के बावजूद आर्थिक विकास और रोजगार स्थिरता को प्राथमिकता देता है।
- **ऑस्ट्रेलिया:** यह बुनियादी ढाँचे के वित्तपोषण के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) का उपयोग करता है, जिससे सार्वजनिक ऋण पर इसकी निर्भरता कम हो जाती है।

आगे की राह: लचीलेपन और जिम्मेदारी के बीच संतुलन

- **राजकोषीय नियमों को मजबूत करना:** एक सख्त निश्चित संख्या के बजाय एक स्पष्ट सीमा-आधारित घाटा लक्ष्य (जैसे, सकल घरेलू उत्पाद का 2.5% - 4%) पेश करना।
- **संस्थागत निरीक्षण:** जिम्मेदार घाटे के विचलन को सुनिश्चित करने के लिए एक स्वतंत्र राजकोषीय परिषद की स्थापना करना।
- **क्रमिक घाटे में कमी:** अचानक व्यय में कटौती के बिना राजकोषीय समेकन की ओर एक विश्वसनीय ग्लाइड पथ के लिए प्रतिबद्ध होना।

निष्कर्ष

- लोचशील घाटे के लक्ष्य की ओर भारत का दृष्टिकोण अप्रत्याशित विश्व में अनुकूल आर्थिक नीतियों की आवश्यकता को दर्शाता है।
- लोचशीलता संकटों को प्रबंधित करने और विकास को बढ़ावा देने में सहायता करता है, लेकिन इसे दीर्घकालिक राजकोषीय स्थिरता बनाए रखने के लिए विवेकपूर्ण तरीके से लागू किया जाना चाहिए।
- एक संतुलित दृष्टिकोण - एक स्पष्ट मध्यम अवधि के राजकोषीय रोडमैप को बनाए रखते हुए अस्थायी विचलन की अनुमति देना - आर्थिक स्थिरता और विकास दोनों को सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

Source: IE

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत के राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों में लोचशीलता बनाए रखने के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए। घाटे के प्रबंधन के लिए एक गतिशील दृष्टिकोण भारत के विकासात्मक लक्ष्यों के संदर्भ में आर्थिक विकास, सार्वजनिक निवेश और राजकोषीय विवेक की आवश्यकताओं को कैसे संतुलित कर सकता है?

■■■■